REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिका

डॉ. मोहन म. वानखेडे
पूजा शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, गोंदिया.

सारांश:

अगर हम खेलों की बात करें तो खेलों में महिलाओं कीभागीदारी शौकिया और पेशेवर दोनों श्रेणियों में मौजूद थी।भारतीय महिलाएं सभी प्रकार के खेलों में सदियों से दुनिया भर में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय खेलों में भाग लेती रही हैं।बीसवीं शताब्दी में खेल में महिलाओं की भागीदारी और लोकप्रियता का काफी विस्तार हुआ। विशेष रूप से पिछले 25 वर्षों में, उन्होंने आधुनिक समाजों में उन परिवर्तनों को प्रतिबिंबित किया जो लैंगिक समानता पर जोर देते हैं। भारतीय महिलाएं किसी दूसरे देश की महिलाओं से कम नहीं हैं। वे कई खेलों में भाग लेते रहे हैं औरपदक घर लाकर देश को सम्मानित किया है।ऐसे क्ई खेल हैं जहां पुरुष भी कोई पदक नहीं ला सके हैंलेकिन हमारी भारतीय महिला ने सफलता हासिल की है।इन चैंपियनों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रिकॉर्ड स्थापित किए हैं और खिताब जीते हैं।

नारी एक परिवार ही नहीं पूरे समाज की रीढ़ होती है। वे महान उपलब्धिहासिल करने वाले हैं जो समाज को सशक्त बनाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में महिलाओं को कम करके आंका जाता है और पुरुषों की तुलनामेंउनकी क्षमताओं को कम आंका जाता है, फिर भी वे पुरुषों से आगे निकलने का रास्ता तलाशती हैं। जिन्हेंपेशे के विभिन्न क्षेत्रों में अपमानित किया जाता है और उन्हें अपने सपनों और करियर को आगे बढ़ाने की अनुमति नहीं है। भारत में खेलों में कई महिलाओं ने अपने लिए एकआशाजनक करियर स्थापित करने के लिए भेदभाव, सामाजिक अभाव और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों की बेड़ियोंसे मुक्त होने की कोशिश की है। यह शोधपत्र भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिका का अध्ययन करने हेतु लिखा गया है

मुख्य शब्द: भारतीय महिला, खेल, खेल में महिलाओं की भागीदारी,महिला सशक्तिकरण

अनुसंधान के लिए प्रयुक्त डेटा संग्रह विधि

शोध पत्र के लिए डेटा पुस्तकों, वेबसाइटों और संबंधित साहित्य से एकत्र किया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

1) भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिका का अध्ययन करना।
2) भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों में आनेवाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
3) खेलों के द्वारा महिला सशक्तिकरण में भूमिका निभा सकते है उन उपायों की खोज करना।

परिचय:

महिला एथलीटों ने सिर्फ एक माँ होने के अलावा कई भूमिकाएँ प्राप्त करके समाज में एक सम्मानित स्थान पर कब्जा कर लिया है। उनकी कड़ी मेहनत और खुद को साबित करने के जुनून ने उन्हें सम्मान हासिल करने में मदद की है और आखिरकार उन्हें स्वीकार किया जाता है और इस कार्य के लिए उनकी सराहना की जाती है। लोगों की मानसिकता में क्रांति आ रही है और वे महिलाओं को प्रशंसनीय

व्यक्ति मानने लगे हैं जो बाकी दुनिया को सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरित करती हैं। शायद महिलाओं की अभूतपूर्व वृद्धि उनके समर्पण और इच्छाओं का एक उल्लेखनीय परिणाम है। महिलाओं के खेल का इतिहास19वीं शताब्दी से जाना जा सकता है क्योंकि उच्च वर्ग की महिलाएं 19वीं शताब्दी के अंत में घुड़सवारी, तीरंदाजी, स्कीइंग, टेनिस, गोल्फ और स्केटिंग आदि जैसे खेलों को खेलने में सक्रिय रूप से शामिल थीं। 1900 में ओलंपिक के दूसरे खेलके दौरान पहली बार महिलाओं ने आधुनिक ओलंपिक खेलों में भाग लिया और केवल मुक्त पुरुष ग्रीक नागरिकों को पहले आधुनिक ओलंपिक खेलों के साथसाथ प्राचीन ओलंपिक खेलों में भाग लेने की अनुमति दी गई। इसके अलावा, महिलाएं केवल उन खेल आयोजनों में भाग ले सकती थीं जिन्हें"स्त्री खेल" माना जाता था और महिलाओं के खेल आयोजनों के रूप में जाना जाता था। ओलंपिक खेल और उसके निर्णयों का संचालन और प्रभुत्व उन पुरुषों द्वारा किया जाता था जो महिलाओं को कमजोर प्राणी मानते थे और सभी खेलों के लिए उपयुक्त नहीं थे। दूसरे ओलंपिक खेलों में19 देशों के 1066 एथलीटों में से केवल 12 महिलाओं ने भाग लिया। खेल एक सार्वभौमिक रूप से साझा मानव संस्कृति है जिसने समय के साथ लोगों की मानसिकता और उनकी जीवन शैली को भी बदल दिया है। यह महिला खेलों के विकास की शुरुआत मात्र थी।

खेल एक ऐसा क्षेत्र है जो खेल मेंमहिलाओं सहित दुनिया भर के हर व्यक्ति को एकजुट करता है। कई अभूतपूर्व महिला एथलीट हैं जिनकी प्रशंसा की जाती है और उन्होंने युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने और अपने सपनों को जीने के लिए प्रेरित किया है। जबमहिलाओं के लिए खेलों की बात आती है, तो उनके लिए चीजें बहुत आसान नहीं होती हैं और उन्हें पुरुषों से ऊपर उठने के लिए कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। भले ही पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक मानाया जाता है और उन्हें अधिक भुगतान किया जाता, हैफिर भी महिला एथलीट अपने समर्पण और कड़ी मेहनत के माध्यम से सभी चुनौतियों से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रही हैं। महिलाओं ने अपने तरीके से संघर्ष किया है और वर्तमान में विभिन्न खेल प्लेटफार्मों पर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें श्रेय दिया जा रहा है। वे सभीबाधाओं कोपार कर रहे हैं। सानिया मिर्जा, मैरी कॉम, मिताली राज, पीवी सिंधु, साइना नेहवाल, रानी रामफल और अन्य जैसे कई खिलाड़ियों ने विभिन्न खेल क्षेत्रों में अपनी शानदार जीत से देश को गौरवान्वित किया है। उन्होंने खेल के वर्चस्व वाले क्षेत्र को पार कर लिया है जो केवल पुरुषों तक ही सीमित था। महिला एथलीट संख्या में लगातार बढ़ रही हैंऔर वे समान रूप से बेजोड़ और अपराजेय हैं, उदाहरण के लिए, न केवल खेल बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों की तुलना में अधिक सक्षम हो रही हैं।

भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिका:

लैंगिक समानता भारतीय समाज की प्रमुख चिंताओं में से एक है और अबइसे कई अधिकारियों और महिलाओं द्वारा भी देखा जा रहा है। महिलाओं को उत्साही लिंगवाद के परिणामों का सामना करने के लिए बनाया जाता है और उन्हें जीवन के सभीपहलुओं में आंका जाता है। महिलाओं ने अब अपने जीवन में उत्कृष्ट प्रदर्शन और समर्थन किया है। खेल उद्योग मेंमहिला एथलीटों की संख्या में तेजी देखी गई है। खेलों में महिलाओं के सामने सबसे पहली और सबसे बड़ी चुनौती उनके वेतनमान में गिरावट है क्योंकि महिला एथलीटों को पुरुष समकक्षों को दिए जाने वाले भुगतान से या तो कम या आधे का भुगतान किया जाता है। पुरुष और महिला आय केबीच बहुत बड़ा अंतर है और ऐसा ही पुरस्कार राशि के मामले में भी है।भले ही दोनों प्रतियोगी समान रूप से प्रतिभाशाली हों फिर भी उनमें अंतर होता है। इसके अलावा, महिला एथलीट पुरुषों की तुलना में कम प्रतिनिधि हैं। और पूर्व को आमतौर पर उपेक्षित किया जाता है और खेलों के लिए सुरक्षित सुनहरे अवसरों से वंचित किया जाता है। महिलाओं को मैदान पर और बाहर भी संशोधित किया जाता है। उन्हें क्षमता औरप्रतिभा की संस्थाओं के रूप में नहीं देखा जाता है। महिला एथलीटों की स्थिर आय निश्चित नहीं है और नौकरी की सुरक्षा की अनिश्चितताहै। यह महिलाओं के लिए अतिरिक्त आय के लिए दूसरी नौकरी करने का कोई विकल्प नहीं छोड़ता है। इन तमाम चुनौतियों के बावजूद भारत में महिला एथलीट जीवन में उत्कृष्टता हासिल करने का प्रयास कर रही हैं और इतिहास रच रही हैं।

सदियों से महिलाओं को पुरुषों द्वारा प्रताड़ित और हीन माना जाता रहा है। उन्हें अवसरों से वंचित कर दिया गया है और उन्हें छोटे काम के लिए उपयुक्त माना जाता है। दशकों से, महिलाओं ने प्रमुख संस्कृति से बाहर निकलने के लिए संघर्ष किया है। अब वे अंत में चरम पर पहुंच गए हैं क्योंकि उन्होंने कभी हार नहीं मानी

मेहनत और लगन से सपने पूरे किए जा सकते हैं। महिलाओं ने खेल उद्योग में गहरी उपस्थिति दर्ज की है और उनका धैर्यउनके लिए फलदायी साबित हुआ है। जो लोग अपना रास्ता निकालने की कोशिश करते हैं उनके लिए जीवन अभी आसान नहीं है। वर्तमान परिदृश्य में, भारत महिला सशक्तिकरण के मामले में विकसित हो रहा है जहां हमारे देश की महिलाएं न केवल विभिन्न करियर विकल्प चुन रही हैं बल्कि भारत को गौरवान्वित भी कर रही हैं। इन महिलाओं ने न केवल अपने कौशल को साबित किया है,बल्कि अन्य लड़कियों को

भी खेल के पेशे को अपनाकर लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। हाल ही में भारतीय महिला एथलीट: साक्षी मलिक, दीपा करमाकर और पीवी सिंधु ने 2016 रियो ओलंपिक में इतिहास रचा है और राष्ट्र को बालिका शक्ति दिखाई है। नीचे कुछ बेहतरीन प्रतिभाओं की चर्चा अगर हम करे तो भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिका अधिक स्पष्ट हो सकती है

साक्षी मलिक एक भारतीय फ्रीस्टाइल पहलवान हैं जिनका जन्म 3 सितंबर 1992 को हुआ था। हाल ही में उन्होंने 2016 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में प्रसिद्धि प्राप्त की जहां उन्होंने 58 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक जीता और ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बनीं। और देश की चौथी महिला ओलंपिक पदक विजेता हैं। इससे पहले दोहा की 2015 एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में, उन्होंने ग्लासगो में 2014 राष्ट्रमंडल खेलों में कांस्य पदक और रजत पदक जीता था। हरियाणा के मोखरा गांव में जन्मी साक्षी को कुश्ती की ओर प्रेरणा अपने दादा बदलू राम को देखकर मिली। स्थानीय लोगों के विरोध का सामना करने के बाद भी उसने अपने सपने को जारी रखा और 58 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर जूनियर विश्व चैंपियनशिप2010 में एक पेशेवर पहलवान के रूप में अपनी पहली सफलता दर्ज की। कुश्ती के क्षेत्र में अपनी विभिन्न सफलताओं के अलावा, वह वर्तमान में भारतीय रेलवे के दिल्ली मंडल के वाणिज्यिक विभाग, उत्तर रेलवे क्षेत्र में कार्यरत हैं औरJSW स्पोर्ट्स एक्सीलेंस प्रोग्राम का एक हिस्सा हैं।

पुसरला वेंकट सिंधु एक भारतीय पेशेवर बैडमिंटन खिलाड़ी हैंजिनका जन्म 5 जुलाई 1995 को हुआ था। 2016 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में, वह ओलंपिक रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं और साइना के अलावा ओलंपिक पदक जीतने वाली 2 भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। नेहवाल। उन्होंने2013 और 2014 में विश्व चैंपियनशिप में कांस्य, 2014 में इंचियोन एशियाई खेलों और एशिया चैम्पियनशिप (2014) में स्वर्ण पदक और 2011 में राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जैसे अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप में विभिन्न पदक जीते हैं। अर्जुन पुरस्कार विजेता की बेटी को भी सम्मानित किया गया था।

दीपा करमाकर एक कलात्मक जिमनास्ट हैं जिनका जन्म 9 अगस्त 1993 को अगरतला में हुआ था। वह 52 वर्षों में ओलंपिक में भाग लेने वाली पहली भारतीय महिला जिमनास्ट हैं। वह उन 5 महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने प्रोडुनोवा को सफलतापूर्वक उतारा है जिसे जिम्नास्टिक में सबसे कठिन वॉल्ट माना जाता है। वह ग्लासगो में 2014 राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला जिमनास्ट भी हैं। 2007 से उसने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप में 67 स्वर्ण सहित 77 पदक जीते हैं। उन्हें 2016 में रियो ओलंपिक में उनके सराहनीय प्रदर्शन के लिए खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित कियागया था।

सानिया मिर्जा एक भारतीय पेशेवर टेनिस खिलाड़ी हैं और वर्तमान में महिला युगल में नंबर1 के रूप में स्थान पर हैं। 15 नवंबर 1986 को जन्म, टेनिस सनसनी देश में सबसे अधिक भुगतान पाने वाले और हाईप्रोफाइल एथलीट में से एक है। 30 साल की उम्र में महिला युगल ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाली पहली भारतीय टेनिस खिलाड़ी हैं।विंबलडन 2015 में मार्टिना हिंगिस के साथ। वह सर्वोच्च खेल सम्मान- राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार प्राप्त करने वाली दूसरी भारतीय टेनिस खिलाड़ी भी हैं। अन्य पुरस्कारों में अर्जुन पुरस्कार (2005), डब्ल्यूटीए न्यू कॉमर ऑफ द ईयर (2005), पद्म श्री (2006), पद्म भूषण (2016) शामिल हैं और 2014 में तेलंगाना सरकार ने उन्हें राज्य का ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया। वह अपने इतिहास में संयुक्त राष्ट्र महिला सद्भावना राजदूत के रूप में नियुक्त होने वालीपहली दक्षिण एशियाई महिला भी हैं और उन्होंने हैदराबाद में एक टेनिस अकादमी की स्थापना की है। टेनिस क्वीन ने6 साल की उम्र में टेनिस खेलना शुरू किया और 2005 में ऑस्ट्रेलियन ओपन के तीसरे दौर में जाने पर प्रमुखता से उठीं।

17 मार्च 1990 को जन्मी साइना नेहवाल पहली और एकमात्र महिला भारतीय पूर्व विश्व नंबर1 हैं। भारत की ओर से 1 पेशेवर बैडमिंटन एकल खिलाड़ी। उसने ओलंपिक में3 बार भारत का प्रतिनिधित्व किया और अपनी दूसरी उपस्थिति में कांस्य पदक जीता। वह पहली भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी हैं जिन्होंने ओलंपिक पदक, BWF वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप जीती है और 4-स्टार टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय महिला और सबसे कम उम्र की एशियाई हैं। उन्हें भारत में बैडमिंटन की लोकप्रियता बढ़ाने का श्रेय भी दियाजाता है और उन्हें पद्म भूषण, राजीव गांधी खेल रत्न और अर्जुन पुरस्कार जैसे अत्यधिक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। वह एक सफल बैडमिंटन खिलाड़ी होने के अलावा कराटे में ब्राउन बेल्ट भी हैं

बाएं हाथ की भारतीय अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ीज्वाला गुट्टा का जन्म 7 सितंबर 1983 हुआ था और उनका जन्म हुआ था। इंडो-चाइनीज मूल ने एसएम आरिफ के पेशेवर प्रशिक्षण के तहत 10 साल की उम्र में अपना प्रशिक्षण शुरू किया। 13 साल की उम्र में, उन्होंने केरल (1996) में अंडर-13 मिनी नेशनल चैंपियनशिप जीती। 2013 तक, उसने 14 बार राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप जीती और विश्व चार्ट में शीर्ष 20 में लगातार चमक रही है। उसने भारत के लिए कई पदक जीते, जिसमें बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड चैंपियनशिप, कॉमनवेल्थ गेम्स, थॉमस एंड उबेर कप टीम, एशियन बैडमिंटन चैंपियनशिप, नेपाल इंटरनेशनल सीरीज़ टूर्नामेंट2008 और महिला डबल्स श्रेणी में

योनेक्स डच ओपन ग्रां प्री 2008 शामिल हैं। वह ओलंपिक में 2 स्पर्धाओं के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली महिला भी हैंभारतीय इतिहास में। 2011 में बैडमिंटन खिलाड़ी के रूप में उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें भारत के दूसरे सर्वोच्च खेल सम्मान्अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

मनिका बत्रा शीर्ष क्रम की महिला टेबल टेनिस खिलाड़ी हैं जिनका जन्म 15 जून 1995 को दिल्ली, भारत में हुआ था। उन्होंने 2014 राष्ट्रमंडल खेलों ग्लासगो और 2014 एशियाई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने चिली ओपन के 2011 अंडर-21 वर्ग के लिए रजत पदक, 2015 राष्ट्रमंडल टेबल टेनिस चैंपियनशिप में 3 पदक और 2016 दक्षिण एशियाई खेलों में 3 स्वर्ण पदक जीते। भारतीय इक्का भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईटीएफ) विश्व रैंकिंग में 115 वें स्थान पर है। 12 जून 1985 को जन्मीं सबा अंजुम करीम भारतीय महिला हॉकी टीम की सदस्य थीं और मैनचेस्टर में 2002 के राष्ट्रमंडल खेलों में सबसे कम उम्र की थीं। पूर्व हॉकी खिलाड़ी का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य में हुआ था, उन्होंने 2000 में अंडर-18 एएचएफ कप, 2002 में एशियाई खेलों, 2004 में एशिया कप, 2002 और 2006 में राष्ट्रमंडल खेलों 2001 में मैनचेस्टर, जूनियर विश्व कप जैसे कई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। ब्यूनस आयर्स और ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट सीरीज और न्यूजीलैंड टूर। उसने और उसकी टीम ने भारत के लिए कई पदक जीते जैसे मैनचेस्टर कॉमवेल्थ गेम्स (2002) और दिल्ली एशिया कप (2004) में स्वर्ण और दोहा एशियाई खेलों (2006) में कांस्य। उन्हें भारत के राष्ट्रपति (2013) द्वारा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया, भारत में चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार- पद्म श्री (2015) और छत्तीसगढ़ सरकार ने उन्हें पुलिस उपाधीक्षक का पद दिया।(डीएसपी) पुलिस विभाग में।

मिताली राज भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हैं। ऑलराउंडर दाएं हाथ के बल्लेबाज का जन्म 3 दिसंबर 1982 को राजस्थान के जोधपुर में एक तमिल परिवार में हुआ था। उन्हें 17 साल की उम्र में भारतीय महिला क्रिकेट टीम के लिए चुना गया था और 1999 में आयरलैंड के खिलाफ 114 के प्रभावशाली स्कोर (और नॉट आउट) के साथ अपना पहला एकदिवसीय मैच खेला था। 19 साल की उम्र में, अपने तीसरे अंतरराष्ट्रीय टेस्ट में उन्होंने अगस्त 2002 में इंग्लैंड के खिलाफ 214 का एक नया उच्च स्कोर करके दुनिया के सर्वोच्च व्यक्तिगत टेस्ट स्कोर के करेन रोल्टन का रिकॉर्ड तोड़ दिया, जो 19 महीने तक खड़ा रहा। 2013 महिला (ओं) विश्व कप में, उन्हें एकदिवसीय (एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय) में नंबर 1 क्रिकेटर के रूप में अभिनय किया गया था। उन्हें भारतीय महिला क्रिकेट के तेंदुलकर के रूप में भी जाना जाता हैक्योंकि वह वर्तमान में सभी प्रारूपों (टेस्ट, एकदिवसीय और टी20) में भारत की सर्वकालिक अग्रणी रन-स्कोरर हैं। भारतीय कप्तान एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में 5000 रन का मील का पत्थर पार करने वाली पहली महिला हैं जिन्हें 2003 में भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार और 2015 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

इनके अलावा ऐसे अनेक नाम है जिन महिलों ने खेल के माध्यम से अपना सशक्तिकरण किया है और भारत का नाम विश्व में रोशन किया है. जिनमें झूलन निशित गोस्वामी भारतीय राष्ट्रीय महिला क्रिकेट टीम की एक ऑलराउंड क्रिकेटर, अरुणिमा सिन्हा एक राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी, मंगटे चुंगनेइजैंग मैरी कॉम मणिपुर में कोम्कोकी जनजाति की एक भारतीय मुक्केबाज, अंजलि भागवत एक पेशेवर भारतीय निशानेबाज, हीना सिद्धू पहली भारतीय पिस्टल शूटर हैं जिन्हेंISSF द्वारा विश्व नंबर 1 स्थान दिया गया है, गीता फोगट एक भारतीय महिला पहलवान, सोनिका कालीरामन एक भारतीय पहलवान, तानिया सचदेव एक भारतीय शतरंज खिलाड़ी, आकांक्षा सिंह भारत की महिला राष्ट्रीय बास्केटबॉल टीम की कप्तान शर्मिला निकोललेट बैंगलोर की एक इंडो-फ्रेंच पेशेवर गोल्फर, पिलावुल्लाकांडी थेक्केपरम्बिल उषा केरल की एक भारतीय ट्रैक और फील्ड एथलीट, सुनीता रानी एक भारतीय एथलीट, शिखा टंडन बैंगलोर की एक चैंपियन तैराक, कृष्णा पूनिया एक भारतीय डिस्कस थ्रोअर, युमनाम रेणु बाला चानू एक भारतीय महिला भारोत्तोलन चैंपियन, कर्णम मल्लेश्वरी एक सेवानिवृत्त भारतीय भारोत्तोलक, दीपिका कुमारी एक भारतीय तीरंदाज, अंजू बॉबी जॉर्ज एक भारतीय एथलीट, सीमा पुनिया अंतिल एक भारतीय डिस्कस थ्रोअर, दुती चंद एक भारतीय पेशेवर धावक, हरवंत कौर एक भारतीय डिस्कस थ्रोअर और शॉट पुटर आदि नाम शामिल है।

समकालीन भारत में नारीवाद, महिलाओं के सशक्तिकरण और लैंगिक समानता पर अक्सर चर्चा की जाती है।खेल उद्योग, अन्य हितधारकों के साथ, महिला सशक्तिकरण में योगदान करने के लिए कदम उठा रहा है। भारत में, खेल उद्योग उन विषयों को छूकर समाज को बदलने की कोशिश कर रहा है जिन पर शायद ही कभी सार्वजनिक रूप से चर्चा की जाती है। पिछले कुछ वर्षों में, दुनिया भर के लोगों का ध्यान, विशेष रूप से भारत में, महिला सशक्तिकरण के विषय पर केंद्रित रहा है। महिलाओं के सशक्तिकरण के बारे में इस प्रचार के पीछे का तथ्य यह है कि चर्चा पूरी दुनिया में महिलाओं की भयावह स्थिति की गवाही देती, लेकिन भारत और अन्य विकासशील देशों में इससे भी ज्यादा। इससे पहले, महिलाओं को हमेशा गुलामों की तरह दबाया जाता था और उनके साथ व्यवहार किया जाता था। उन्हें मौलिक

अधिकारों से वंचित कर दिया गया था जैसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार आदि। राजनीति, खेल, शिक्षा या कॉर्पोरेट स्तर पर किसी भी क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं के बीच कई असमानताएं थीं। आज भी महिलाओं के प्रति धारणा नकारात्मक बनी हुई है। महिलाएं दुनिया की आधी से अधिक आबादी का गठन करती हैं और उन्हें अभी भी पुरुषों की तुलना में कम भुगतान किया जाता है। अपने बच्चों की देखभाल करने, खाना पकाने, परिवार की देखभाल करने जैसी घरेलू जिम्मेदारियों के अलावा, वे राष्ट्र के विकास में योगदान करते हैं। कुछ महिलाये विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। महिलाएं शिक्षा, रोजगार, उत्तराधिकार, विवाह, राजनीति और खेल के क्षेत्र में भी। दुनिया भर में और भारत में महिलाओं की स्थिति 20वीं सदी में असाधारण रूप से बढ़ी है। जो महिलाएं अपने घर की चारदीवारी के भीतर रहने के लिए इच्छुक थीं, उन्होंने आज ऊपर उठने का अपना रास्ता खोज लिया है। यह भारत में महिला सशक्तिकरण के सूचक है ।

निष्कर्ष:

भारत सरकार द्वारा हर उम्र और हर जाति की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। सती, दहेज, कन्या भ्रूण हत्या और भ्रूण हत्या, छेड़खानी, बलात्कार, अनैतिक तस्करी और महिलाओं से संबंधित अन्य अपराधों के खिलाफ आपराधिक कानून मुस्लिम विवाह अधिनियम 1939, हिंदू विवाह अधिनियम 1955 और अन्य वैवाहिक कानूनों जैसे नागरिक कानूनों के अलावा अधिनियमित किए गए हैं। हाल ही में राज्यसभा ने कामकाजी महिलाओं को लाभ पहुंचाने के लिए मातृत्व लाभ (संशोधन) विधेयक, 2016 भी पारित किया है। महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए एक राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) का भी गठन किया गया था। वर्ष 2001 को भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया गया था।भारतीय खेल ने सहस्राब्दी की बारी के बाद से विश्व स्तर पर चमकने वाली महिला एथलीटों की संख्या में भारी वृद्धि देखी है।भारतीय महिला एथलीट खेलों में बाधाओं को तोड़ना जारी रखती हैं पोडियम तक पहुंचने से लेकर, पेशेवर रूप से खेलों को अपनाने और अपने करियर की कमान संभालने तक का सफर जारी है इससे यह जाहिर होता है की भारत में महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिकामहत्वपूर्ण है.

संदर्भ:

- *Meenakshi Malhotra,Empowerment of Women,Isha Books (September 2004)*
- *Dr. P.B. Dubey, Women Empowerment Through Sports and Physical Education,(January 2015)*
- *Joli Sandoz, Joby Winans, Whatever It Takes: Women on Women's Sport, Farrar, Straus and Giroux (August 1999)*
- *http://oldisrj.lbp.world/UploadedData/7177.pdf*
- *https://hindi.webdunia.com/aaina-2014/game-india-2014-114122900067_1.html*
- *https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%96%E0%A5%87%E0%A4%B2_%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BE_%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE*
- *http://cmcldp.org/userfiles/Women%20Empowerment.pdf*
- *https://www.hindikiduniya.com/essay/status-of-women-in-india-essay-in-hindi/*
- *https://www.allresearchjournal.com/archives/2016/vol2issue10/PartG/2-10-19-695.pdf*
- *https://www.prabhasakshi.com/womenarticles/financial-self-sufficiency-for-women-is-extremely-important*
- *https://www.rnlkwc.ac.in/pdf/anudhyan/volume4/Games-And-Sports-A-Gateway-Of-Womens-Empowerment-In-India-Dr-Krishnendu-Pradhan.pdf*
- *https://youthforum.co/sports-a-gateway-to-womens-empowerment/*
- *https://www.unwomen.org/en/news/stories/2016/2/lakshmi-puri-speech-at-value-of-hosting-mega-sport-event*
- *https://www.kheljournal.com/archives/2016/vol3issue6/PartA/3-5-97-639.pdf*
- *https://www.empowerwomen.org/en/community/discussions/2015/10/women-empowerment-through-sports*
- *https://www.un.org/womenwatch/daw/public/Women%20and%20Sport.pdf*
- *https://www.academia.edu/10971881/Empowering_Women_through_Education_and_Sports*
- *https://en.wikipedia.org/wiki/Women%27s_sports*